

gehen: अत्राक्षणां कर्तुमिच्छति रोद्रास्ते मां यथा व्यभिचरन्ति नित्यम् MBh. 1, 3234. न ब्रह्मदत्तस्ते भूयो व्यभिचरिष्यति KATHA. 20, 4. 2. भर्तारमपि जीवन्मन्यान्व्यभिचरत्युत (नार्यः) MBh. 3, 12869. — 2) *es Jmd anthun, zuhaben*: न व्यभिचरेत् LĀTJ. 2, 1, 11. — 3) *fehl schlagen, misslingen*: तस्य व्यभिचरत्यर्थं आरब्धाश्च पुनः पुनः BHĀG. P. 4, 18, 5. न व्यभिचरति तवेता यया ह्यभिकृतो भागवतो धर्मः 6, 16, 43. — 4) *hinausgehen über (acc.)*, *sich entfernen von*: सकृत्संख्याम् KIB. 3, 34. अन्ये ऽपि कृतो ऽभिधेयं व्यभिचरति Sch. zu P. 3, 3, 113. Sch. zu ĠAIM. 1, 1, 5. — Vgl. व्यभिचार u. s. w.

— अथ *herabkommen*: अथ द्वेके अथ त्रिका दिवश्चरति भेषजा RV. 10, 39, 9. — *caus. in Anwendung bringen*: लेपान् Suçr. 2, 8, 12. 48, 20. शस्त्रम् 1, 16, 5. कषायं काले ऽवचारितम् *rechtzeitig angewandt* 2, 415, 13. 367, 5. 384, 6. — Vgl. अवचर, अवचाराण.

— अन्व *sich einschleichen in*: यदै यज्ञस्य वास्तव्यं क्रियते तदनु रुद्रो ऽवचरति TBH. 1, 4, 4, 7. यज्ञम् ÇAT. Br. 4, 3, 2, 6. TS. 6, 4, 2, 6. 9, 5. — Vgl. अन्ववचार.

— अन्व *andringen, eindringen*: नेतुरस्तावाप्रा रक्षास्यन्ववचरान् ÇAT. Br. 1, 3, 4, 8. — *caus. entsenden*: आत्तराणां च भेदार्थं चरान्-व्यवचारयेत् MBh. 12, 3779.

— न्यव *eindringen*: पुत्रिणि बधो नि चरन्ति मामव RV. 9, 107, 19.

— आ 1) *sich nähern, herbeikommen zu (acc.)*: कमा जनें चरति RV. 6, 21, 4. 1, 164, 40. निष्कृतम् 123, 9. 114, 3. आ वां चरतु वृष्टयः 8, 23, 6. 6, 37, 4. आ च परां च चरति 10, 17, 6. 35, 6. 1, 62, 8. ये पन्थिना दिव आचरन्ति *herführen* TS. 2, 3, 14, 5. — 2) *betreten, durchstreichen*: तस्कराचरितो मार्गः R. 3, 57, 11. सदिराचरितः पन्थाः BHĀG. P. 4, 2, 10. आपदाचरिते — वने MBh. 3, 2651. परेताचरिताम् — दिशम् Daç. 1, 14. — 3) *verfahren, zu Werke gehen, sich benehmen*: एवमाचरेत् RV. Prāt. 3, 7. जडवह्नोक्त आचरेत् M. 2, 110. एतेन इवाचरति P. 3, 1, 11, Sch. Vop. 21, 7. *gegen Jmd (loc.)*: विज्ञाविवाचरति शिवे 6. आचरित n. *das Betragen, Benehmen* BHĀG. P. 3, 14, 26. — 4) *behandeln*: सर्वमेवान्यद्यथासंस्कृतिमाचरेत् UPAL. 3, 5. (तान्) शूद्रवदाचरेत् M. 8, 102. पुत्रं मित्रवदाचरेत् KĀN. 11. पुत्रमिवाचरति शिष्यम् P. 3, 1, 10, Sch. Vop. 21, 6. — 5) *mit Jmd umgehen, verkehren*: आचरन्स्तेः KĀND. Up. 5, 10, 9. पतितेन सकृच्चरन् M. 11, 180; vgl. एनस्विभिः — नार्थं किञ्चित्सकृच्चरेत् 189. — 6) *an Etwas gehen, thun, üben, treiben, vollziehen*: तानि (कर्माणि) आचरथ MUND. Up. 1, 2, 1. परं शौचमिवाचरधम् MBh. 3, 10837. नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् M. 3, 156. देवानां प्रियम् 9, 95. JĀG. 3, 65. MBh. 3, 2166. BHĀG. 3, 21, 16, 22. परां प्रीतिं भार्यायाम् MBh. 3, 8581. ÇĀK. 24. विधिम् M. 11, 217, 7, 113. धर्मम् 10, 53, 12, 20. न चाप्याचरितः पूर्वैरप्यं धर्मः MBh. 1, 7259. सम्यगाचीर्षं धर्मे 14, 1473. 13, 6454. धर्मं पूर्वं धने मध्ये जघन्ये काममाचरेत् 3, 1303. fg. सदा वातं च वाचं च छीवनं चाचरेच्छनैः 4, 117. धृतप्राशनम् M. 3, 144. नुत्प्रतीकारम् 10, 105. शूद्राद्रव्योपादानम् 8, 417. स्नानम् 4, 45, 129. प्राणाबाधम् 54. प्राणायामान्बद्ध 6, 69. गुरुवद्वृत्तिम् 2, 205, 247. संभाषां ताभिः 8, 363. संबन्धान् 4, 244. व्यवहारम् 8, 167. अतिसौहित्यम् 4, 62. वेशवाग्वुद्धिसास्त्र्यम् 18. मृगयो मैथुनम् MBh. 1, 4585. रोमशातनम् Suçr. 2, 14, 1. पुरीषोत्सर्गम् PĀNĀT. 29, 23. स्थितिम् *stehen bleiben* RAGH. 1, 89. 12, 22. त्रणाविघ्नम् VIKR. 17. भैक्षम् *Almosen bitten* JĀG. 3, 54. नासिक्यम् *anwenden* ÇIKSUĀ 27. RV. Prāt. 11, 12, 15. Ohne obj.: अगस्त्यो ह्याचरत् A. *hat es gethan* M. 3, 22.

अनाचरती *sich passiv verhaltend* R. 2, 39, 19. — 7) *verzehren* (vgl. simpl. u. 5 am Ende): पिपोलिकाभिराचीर्षमेदस्त्वञ्चांसशोषितम् BHĀG. P. 7, 13, 15. — 8) *कुस्तेनाचरति* KĀTJ. ÇA. 3, 6, 9. 16, 4, 15, 16 erklärt der Schol. durch अग्नी प्रेरयति, प्रक्षिपति *hineinwerfen*; es wird wohl heißen *mit der Hand herbeikommen d. i. nachhelfen, hineinschieben*. SĀJ. zu AIT. Br. erklärt übrigens चरणं auch durch आकृतिप्रलेप. Es scheint ein technischer Ausdruck für eine best. Geberde zu sein. — 9) *आचरित* *herkömmlich, gebräuchlich* (vgl. 6.): आचरितं तु नोत्क्रमेत् *was herkömmlich —, Regel ist* RV. Prāt. 11, 32. ÇĀK. 108, 22, v. l. n. ein herkömmliches Zwangsmittel M. 8, 49. दारपुत्रपशून्कृत्वा (wohl कृत्वा zu lesen; v. l. बद्धा) कृत्वा द्वारोपवेशनम् । यत्रार्थो दाय्यते ऽर्थं स्वं तदाचरितमुच्यते ॥ BRHASP. bei KULL. zu d. St. — Statt der falschen und keinen Sinn gebenden Causalfom आचरयेत् PĀNĀT. IV, 24 ist आवरयेत् zu lesen. — Vgl. आचरण fg., आचार, आचार्य.

— अथ्या *sitzen auf (acc.)*, *einnehmen (einen Sitz)*: शय्यासने ऽथ्याचरिते श्रेयसा न समाविशेत् M. 2, 119.

— अन्वा *nachthun*: को नु तत्कर्म राजर्षेर्नभेरन्वाचरेत् BHĀG. P. 5, 4, 6.

— अन्वा 1) *herankommen*: विशो अर्देवीरन्वाचरन्तीः RV. 8, 83, 15. — 2) *üben, vollziehen*: य एव प्रथमः कल्पस्तमेवान्याचरन्सह MBh. 12, 9719. — Vgl. अन्वाचार.

— उदा *aufsteigen aus*: समुद्रात् RV. 7, 53, 7.

— समुदा 1) *fahren, med.*: रथेन समुदाचरते Siddh. K. 166, a, 4. — 2) *behandeln*: बालानपि च मार्गस्थान्मास्त्रेन सडुदाचरन् (lies: समुदा^o) MBh. 12, 1203. — 3) *thun, vollbringen*: ते यद्वपुः — तच्चैव समुदाचर MBh. 13, 3968. — Vgl. समुदाचार.

— उपा 1) *herbeikommen*: उप नः पितृवा चरं शिवः शिवाभिभूतिभिः RV. 1, 187, 3. 46, 14. प्रत्यङ् ÇAT. Br. 2, 1, 4, 19. 4, 2, 4, 22. — 2) *dienstbereit sein; sich fügen*: इह त्वा भूयां चरेडप त्मन् RV. 4, 4, 9. ममेदनु कर्तुं पतिः सेकुनाया उपाचरेत् 10, 139, 2. उपाचरति तत्र स्म धनानामीश्वरम् Dienste thun MBh. 2, 408. — 3) *behandeln*: व्याज्जेन हि त्वया द्राणा उपाचीर्षाः सुतं प्रति MBh. 18, 95. in medic. Sinne: अभिष्यन्दम् Suçr. 2, 313, 17. स्वरान् 416, 11. — Vgl. उपाचरित fg.

— समुपा 1) *behandeln (medic.)* Suçr. 1, 47, 4. — 2) *üben, sich befeistigen*: तं धर्मम् MBh. 3, 10572.

— उपन्या *eindringen*: मैत्रेण यजुषोपन्याचरति यावत्किपञ्चोपचरति ÇAT. Br. 6, 5, 4, 10.

— पर्या *herbeikommen*: अतः परिं जार इवाचरन्ती RV. 7, 76, 3.

— समा 1) *verfahren, zu Werke gehen*: एवं समाचरन् MBh. in LA. 48, 16. PĀNĀT. 79, 23. यस्य यस्य हि यो भावस्तेन तेन समाचरेत् 1, 78. — 2) *an Etwas gehen, thun, üben, verrichten, vollziehen*: श्रुतं कर्म M. 11, 231. निन्दितम् 11, 44. मनःपूतम् 6, 46. श्रेयः किञ्चित् 2, 223. यत्तेन तत्समाचर MBh. 2, 509. 3, 10259. R. 3, 56, 16. BHART. 1, 21. PĀNĀT. 170, 6. कथमन्यत्समाचरे R. 2, 104, 23. न तत्कर्म समाचरेत् R. 3, 56, 28. BHĀG. 3, 9, 19. PĀNĀT. II, 116. कः — तत्कार्यं विप्रक्षेपा समाचरेत् MBh. 1, 7514. त्वयैतद्धि समाचीर्षां गौतमस्याश्रमे तदा MBh. 14, 1733. सौकुहं सद्युर्कृतस्यापि समाचरन् BHĀG. P. 8, 11, 13. VER. 12, 17. पूजामस्मै समाचर PĀNĀT. III, 158. प्रियाणि — नृपती समाचरत वीर्यावान् MBh. 13, 46, 4, 482. HIT. 1, 73. त्वया पापानि घोरणि समाचीर्षानि पाण्डुषु MBh. 8, 1281.